



अथैषाखकन । वाधिवरुनवृद्धाणी वाधिवरुनवृद्धयात यथादरुमदामद गथैविव
ममायिनातनाथाय रि यनिवकायावकयात खवरु आदिनवकायाकथरुव ॥ छातुवि
अथैषासंथागुनिर्याअर्थकन उरुता यथा मात्र ॥ खवरुददाहिमा ।

DH 28

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

ॐ नमः वक्रसत्त्व
लघनाय कुरुय
वासीवयाव ॥
वाल्लि आदि समा
वासन कुरुयः
यिहावयाव ध
दनके षिष्टाधि

य ॥ इत्यर्त्तं मधुल सकरं सथाय नावि
कादयं श्रुं कथायत्र यधन हाव सा
नी दिन मस्का लका स्य गुन मधुन लीय
या वि समाधि कले सयुजा मधुलाधि
का देव युजा धन काव लाव नायत्रयं
व माघे कमा कथं (थं न स्यं गुन मधुल
वा सन निवाञ्जन लाहा निवका शां

ॐ वक्रसत्त्वाय ॥ न
नवा निष्कर्षा नकारं
अलि नम स्तानमादि
सयुगानकालया
ललाका रुदयाय
युष्टि न रुवा तथाग
य मधुलयवठाका

गणिशमकं षिष्टावृत्तनं थरुव दोवद्व
नव कुरु मधुला मधुलदयकाव सयुथा
नदयकयिनाय नदलाक थुगुविडे म
य एवा रुदयाय थ नायि मखुलात्री य
लिथु जल यानं किनु यनकसलयास
नकापन तथागन नि कायलाय सयाक
य मधुल स इहाय दि यनी श गुल मगुवम ॥

नथा मय्युक्तया
लमइहायननानं
खायाहा ॥ ॥ साव
यममृत् स्वद्वीज
नेदर्विभुनेवकिवि
लेडयव्यवध्याच
काथरुयमसार

अमर्थमयन इयस्यत्माति नि कायमधु
वाकथरुव ॥ निष्ठावायिता धनिआधि
ना ॥ स्ववीरमयनयव(ण) वजाविगनयह
किबधाइममयनयविष्टः मयहूनथाग १
कान्धीममववृयाधात्वा मधुलसा यवदा
यव ॥ ॥ स्वकन मृत् कल्पकानक धिय
मकवादिमयानकान ग(थ)र्वस्वमकमलया

रुय(र्थ)तादधीरु
महासामदावनव
दनाथकि ॥ शुशवा
दिमीममयनव वि
गवयालिविह
धर्मस्व ददिमहार
नाथ दियनीरनवा

वादववद्वकी मसारममृदमथकायव र्वी
द्वर्ककाटिकवनामयन ॥ ॥ शुभमदमदानाथ
मदावाधिनयदद मदागाननिसिख द
दनकिनधमेतत्वा वाधिविकेवददिम तथा
नैमिस्व ॥ वदःधर्म मयव वद्वकर्मयस्व
कि वय किमवकिमिस्वविहन एववगयस्वमा
ठयहनदनाथ मदासाक्यवववमिनि मदा

भाकृयलथायस ॥
निकृत्त यधानयाठ
यभाकृकालस मनु
न ॥ दहायि यामि
न सा ॥ अनर्तमदान
धर्मवद्वा रुना वदि
व ॥ दारिद्र्यवचननय

॥ नदन थनादि या दृक् वि या मर्क य धा
नकृत्त ॥ ॥ अदिवत्तमदायान कृष्ण
ययोनयविधि गार्थेष्टमनुचरवयनिमि
समाक विधान थादना नायायसमरुताव ३
य मदायाननिमित्तथरुव ॥ वद्वा सि य
दाकृत्तमनजायवयव कायवाकृतिवदि
उत्पन्नस्वरुयः ॥ मया यानमरुत्त वायव

नाकृत्तमदयान
यथागमरुत्त मनु
धमनुयथागमाव
मदाययंकारं वाक
लोकावृत्त्यगान
मा चकृत्तथरुव
मिमावत्त थथया

वदमनुयसावने धमनुयसावनशामनु
यथागसुयुत्तमद ॥ यनरुगमदावर्
कर्तव्यव मालसर्गमदायार् मालयासर्ग
सिंहादिनिवर्त वाक्कमनिआदिनवदन
सा लोकयावर्तयथावय चकृत्तवर्तनिवृ
यवर्तयवर्तः ॥ तस्मात्तमि धतिनचिह्नन
यादूनशादि या कृत्तमवर्तययव वदय

सर्व

कवाययस्य ॥ वल
निदृष्टा माद्य समस्त
यायमसारयायन
आजियायन स्वस्त
कवरुवयवधमनि
नजियनी ॥ वकक
विकमेव आचार्य

नयं विज्ञानधाय वलनयमवनवन सर्वेषु
यार्यरुतकयान अनुमाद्यकगत्य ध्यावना
वद्वोषीदधिमन वद्वयासनमननधववय
॥ ॥ यनवधेयसा ॥ वकववतासतकं व ४
यक कलानाथ रुनाथविव वद्वम कठ
वनयास्तु वकयादवयानत आचार्यय
यायवियारिकमे ॥ समयंसर्ववद्वाना धध

मेसमस्तु न थागत
आचार्यमा माद
वनान् समस्तु सत्व
त्याकन धनवाधि
नकमनयाहन स
दाक अदममक
दाय धववादिन

या संवदंगुक्तमकमं धधमेगुक्तकमे
नाथ आचार्यशय रुनाथ सर्वसत्वाथका
थकाययातअर्थसा ॥ ॥ ननावाधिविधि
विरुजायवयव ॥ समवाकव नुगद्विगि
वद्ववाधिसत्वा न समस्तु वद्ववाधिसत्व
नामा थवनामादिथहन वमां ववा मया
सवादाव यावदावाधिमधुलनियधुना

गंगावातावर्द्धयत्
नडत्यातिशयान
रुमयाहन यथा
नाथन संधाधिक
काशीलसिक्काव
त्वाधिवृत्त्याया
वर्द्धयमोचमद्यव

मलातडावाता ॥ दद्यादयामिवरमं दि
वाधिवृत्तमनुरुमे तथा गतयावृत्तुड
वैयधिकानाथा गत्यसुगुर्विव स्यादवृद्ध
कनिष्ठय ग्यानयदयाननिष्ठयनयविवि
कृष्यवर्द्धमोसंगद सत्त्वानां च किं याधिवं स
न यतिगृह्णाम्यहं दृष्टं जीनकाय रुवा ।
वर्द्धयमोसंगद विवेतागदमुरुमं सुगुः

उत्तरवृत्तमनुरुवका
गदयाय संधवव
य वर्द्धयध्वमृदा
नत्वन धनत्वयाक
य मदावर्द्धकवाव
स्यामि यनादानवि
क्रियं मदावर्द्धकल

य ग्याद्यवृत्तविव्यामि थानिनीसंजन
दयागर्द्ध धर्मोत्थागतयाजागनजायव
व वर्द्धयध्वमृदाजीनकाय यतिगृह्णामि
नशा आचार्यध्वगृह्णामि आचार्यनत्वका
य नवकलडक वयायम । वर्द्धयानं यदा
हन यदात्वाध्वदिनदिन युताकर्मयाता
याग्य नववर्द्धकव स्यागम समयवमना

रम धधर्मोत्तम
धर्मकायनिश्चयन
रुक् मदायश्चक
वाधिसमगुरुव नव
रुसंयकुरुत यानि
मयथायका धन
वय नवश्चकमीया

ननधवय ॥ सद्धर्मोयनिगुक्रामि विठनश्च
वाद्यगुक्रानियानिकं वाद्यगुक्रावकय
लक्षुद्ध मदायानकवृष्णयश्चकलस मदा
रुनकलस ॥ संवर्चसर्वसंयकं धधर्मसम ६
गुक्रामिसर्वन धनजिनकायश्चवा यज्ञाक
त्वयाकनयज्ञाकमीविधान मदाकलकलो
हृत्सम ॥ हृत्वाहयामियवर्म जिनजायवययक

लक्ष्म वाधिरुक्
लक्ष्म कायधर्मः
सत्वयाधकाययान
यिशाधिनि यालं
वनमरुद्धमकिष्ट
यामि यानिध्मासवि
मि थायनायायअ

समरुवं तथागतयाविठरुव गृहीर्णसद्ध
निस्यययाह सर्वसत्वाधकालनान समरु
अर्थन ॥ अतिष्ठा तलवयमरुवर्द्ध ताल
गच्छययान अमुक्ताभावाया मर्द्ध मुकिसे
य अनास्वस्थान आस्वासमरुवक्का ध्मासयि
य सर्वसत्वात् समरुत्वंसर्वं सृष्टयियथा
थे निवृत्ति विद्वमदयकशा निधा ॥ हृत्वाही

धुलाह हंरुह ॥ वक्रा
 अरकायवि सुयेव
 नीचिहं यीत्वा ॥ ॥
 यनननचक मानान
 दंरुकारु ॥ उं वक्रः
 ययकं मधुलसनय
 यायानिवासाविष्ण

॥ धनकावना ॥ न मां हकघुमिवाधि वक्रय
 धुस्थानि सुयेवकं वदुसं हं आः उं अक्रय
 उं आ हंः धवउयं नं अउ कं १ कयालम
 खाननहूचक हवभधुनि मटावेय ॥ ॥ न
 हासक ॥ धमनुनवानदाचकं बाहानदाडा
 क मिखायियकं ॥ उं ऊंः विष्णु दे धमीसवे
 धय निर्विकल्या नयनय हं ॥ धमनुनना

यायकं ॥ अस्मि याव
 कानाधि यायाक्रइष्टि
 थिाष्टु सलकाविय
 य खकन ॥ अनक
 यनकृनं ग्यनयाय
 वीदि धयायदाकंद
 दध धार्थिद मधुल

का
 नकाकं याव अर्धरुदासनय ॥ धनक्राहु
 दाहं स्वथ्याथा सौ खं ठलोहामनुन वक्रगं
 लकदावचिचक ॥ ॥ धव धवथाससन
 कल्याकाटिकि अयालकल्याकाटिआख्यान
 याहा यायकं यया यवर्द्धमसयाहा नम
 क्रयंयानि मास्यहन ॥ दृष्टाः मधुल १ म
 स्वयाव ॥ उत्सना माव दृष्टानि सयां वहु

जायायं वनं जमाया
वः शय्यां वयावतः
त्यं न निमीचा न वद्य
स्य नं बहुवाचा का
रुत न या न वः आ
वृद्ध न समरुत सय
सा सवयिव । सर्वय

सर्वे इष्टवस्य संकवा समरुद्वया संक
क्रास्य न गतया निरुवया सश्चावक मनि
न नित्यल इल ॥ अद्य यया नि अवच्छक
नाहुत्या मइला रुवार्त वृद्धा मदात्मा नि ला ६
त्मानः ॥ यन युयं दिने सर्वे यन न च्छसक
नैलिदि साधन थव यु न धा धा ना आ इ था
विगृहीताश्च समरुका यव जायमाना

जायवयिव मदात्मा
नष्ट सक समादाया
युक्त युव ॥ एक मा
मदायान मदाक
यन युयं मिमा
युक्त वत था गतय
कृष्णव रिव विय

नि न व आत्माने ॥ नन युयं मदायान थुति
न स म जाना निरुवयथं निने क जानल
मेवतः श्रीमान् आ मा निरुल सो अ य मान
यं मदायान सत वध इ जान व यं चान गनन
का इ सकल व विवंक रु वि अ थ न था गत
दः ॥ ॥ दुधीः दु व क नी दु वं ॥ धमनुन
कीला सा कृष्ण रू गला सा खं ठ ली दामं रु

कन ॥ धनमधुल
क्राधिवाहनमाकृष्ट
वियाव हिवायाक
नाउनयाहनवक्रा
सनधनठाव मधुल
धुलसारिधनकाव
महासखमाकृष्ट

विश्वरूपन वानकवश्वय समया ॥ धनमिदि
७ ॥ सातकक्रसथ मधुलागावस वाने
स्वप्रखटन इस्वप्रखटमास्वधुयादामनुन
विय ॥ ॥ धनमिवाथनया हिवाधिवा
गृहसनकस्य खाननन सिधमाहानि म
आचार्ययवध ॥ ॥ डयविश्वरूपनगवन
सर्वमिदि सखयद यवमसखाकमासिद्धा

थं ऊः ऊर्वं ऊः य
कावनायाय ॥ डं व
ऊनद्वालखाखं ठागा
दि ॥ धमननमधुल
मसखासय सवलि
वंदाः दीदीदीदीय
वसधिलसश्याका

मिद्धा स्वः ॥ दिगसखानमालमधुथियका
काद्याटयसमययवधयद ॥ धमननव
वयाय। वरुदावसं डं सनिसं नः ॥
दाय। याकिनं धनकाव यव्वदावसं डं यव
नविवासन नमामिनमिन्नमामि ऊः ऊ
तिवृ कसमां कालेनाथदाः ॥ धमननव
वयं मधुलसथियकं नृयमदान खानवि

कायाव शुभया मंत्रं
मधुलघुधुमसिंह
ःयव मदावकमम
सिद्धि मादेधयोदि
कूल ॥ निदायः ॥
धुमनगवन मदाव
मूकैरुथागतः स

सांयेन **धमवकसवितावयः** ॥
य ॥ आकासात्यादिविक्रता दनादिनीधन
यसत् ॥ ६ कोखवदशसिद्धि ॥ सर्वोक्तमदा
दवनाः सर्ववदधवावाजा विद्वमयवमा ॥
स्वतश्चासि सर्ववागानवागिनः ॥ तत्वनसि
(गामदामन ॥ अथैकधुदधमीये आदि
मनरुदुसवात्मा वाधिसत्त्वयसिद्धम ॥ स

वोरुममदासिद्धि
न वदगनायैरुम
धमवसवत्वयिता
स्पर्त यद्वायोयामधु
शाधनद्रसकनकन
शा अगाधनविवाया
रुनिसत्यनमधुव

मादेधुयोगमदया ॥ सिद्धिवदमदाकयो
मा ॥ सर्वसत्त्वमभावायि सर्वसत्त्वद्विष्टन
(धेव कामाद्यु ममयायिनां ॥ यनसत्यनम
न ॥ ननसत्यनमनार्थ कामानर्ह्ययावियुवय
॥ यनिविंदसा माधमी अशुशुद्धाधनाविला
धुदुदुकर्मसमृद्धवाः ॥ नथनारुत्वनियाना
यविविंदस्सुदंदिशं सर्वयथत्त्वकल्यायाः

॥ दवक हाव आवा
 ली आवायय रुनि
 ॥ थनाय हाव याव
 विहाऊन याव के
 ॥ डंख घुवाक हंरु
 कसूया सूर्य वदम
 यहाव सवीर हं ॥

र्यनं स्वयः ॥ ॥ थनसिंधु माह नि मधुवसा
 ननक सांकोय ॥ ॥ आवाययवहा ॥
 सिंधु नक माक थनन सां यु व मधुल बालि
 ॥ ॥ रावना ॥ सिंधु वं वाचन वृ य नावलंश ॥ ११
 ॥ लखन हाय ॥ हंरु क घुघि व स व ड य झर
 घुल य बीरु व हंरु क आः शु जां का व व सि
 आः या नीला झर वि का धि धान लाहा

गिरका यंरगवा व
 थाल का व रुडा हा
 न हा हा व थ ॥ थनमा
 व हन ॥ डं च क वं ध
 लाय खान जान का
 आखं वील हं ॥ व य
 काम गु व सां र वाहन

सु। गु व सक अघे याव क व व न न सां ॥ थन
 अकन काय दिन गु व मधु व वा सां गु व या
 गा हा धि धन न व क ॥ डं वं का घु व हं ॥ धि वा
 र मान य हं ॥ व क वं थन व व क ॥ वा हा न न
 धि या क नां झलि ॥ डं ख घु ला हं हं रू ॥ डं
 थ हा व रु हं व हं व क इ हा ल व न ॥ ड म लीः
 थन ॥ ॥ कलं का व क स स व ना य य व न

सहजानवसावय
 रुनरुयसोनागीस
 जागविरुमत्यादया
 उद्यथीस्यंतय॥८॥
 ति॥ ० ॥खकन॥
 थागनसं धिष्टिना
 यदं मन्तवृकस्य

॥धिष्टानधायक॥ सरुणादंमहासखति
 दजानदस॥ माउसवदनथीय ॥८॥सर्व
 मि॥ध्वमवासधनसयकाव वजननृग
 सुवतंसमयस्वकासिद्धवजयथासखमि ॥९॥
 अश्वत् आतवृक सर्वनथागता समस्तन
 कविशक्ति अधिष्टितयाकथरुवतवर्त
 ध सर्वनथागत धसमस्तनथागतन यव

मवदसामधुलं गु
 रुय इदाययाज्ञा
 मन्तव॥ ॥८॥ख
 इतयठाव युर्वद्वार
 मंगुयादनसमस्त
 आत्माधिनियोतया
 समस्तनथागतस्य

॥८॥१॥यथादननयामधुलस यविष्टायःव
 यमन्तव नवधदानर्ग वसुवियधखझाय
 धुलादाह ॥८॥आःखवीरह ॥८॥माविकान
 ध॥गिनयविधनु ॥८॥सर्वनथागतयूजा
 नथागत यष्टुनाय यूजाडयष्टुनयायम
 मि थवसविडकाकारया ॥८॥सर्वनथागत
 वजसत्वावनाधितिष्टमां वजसत्वनअधि

स्थानया कथं शब्दः ॥
जाडयस्थानया यम
या ॐ सर्वेनथागत
वनं अधिस्थानया क
नयूजा सर्वेनथाग
नियोनयामि थवः
थागतस्य वक्रवत्वा

ॐ सर्वेन वक्रयूजायस्थानाय समस्तवक्रयू
आत्मानं नियोनयामि थवसाविडदादाव
वक्रवत्वा चनाधिनमां समस्तथागतवत्वा
थरुच ॥ ॥ दक्षिणद्वाल ॥ ॐ सर्वेनथाग १३
नयूजा अरिथकयाकम । रियकायात्मान
साविडदादावया ॐ सर्वेनथागत समस्त
रिथिश्चमां वत्तमं वत्तस्य अधिस्थानया थरुच ॥

॥ याश्चिमद्वाल
थागतयूजावयव
वीडनियोननयादा
यवलेयमां अमि
व ॥ ॐ सर्वेनथागत
मियायम आत्मा
सर्वेनथागत सम

॥ ॐ सर्वेनथागतयूजायवक्रमाय समस्त
लेवययकम आत्मानं नियोनयामि थवसा
ॐ सर्वेनथागत समस्तथागत वक्रधमा
नारुस्यवक्रवययका थरुच ॥ ॥ उक्तवत्वा
मंलसमस्तथागत यूजाकर्मादा यूजाक
धीनियोनयामि थवसाविडदादावया ॐ
स्तथागत वक्रकर्माकर्षमां अम्याम

द्वि सौं कमे याद लय
 (घा व स्थना य गु व
 न या मि थ व धा रे
 स त्व या य वि नान या
 उ दा दा र या ॥ ॥
 कल समरुत था
 चू न व रु ह न म त्वा

व य थ रु व ॥ ॥ य व द्वा ल मं ॥ डं गु व रु व न
 कला उ स व व ध ड य स्थ न या स आत्मानं न यो
 उ दा दा ल या स व स त्व या रे ना धार्थं स म न
 य अर्थ म आत्मानं न यो न या मि थ व स वि ॥ ४
 अ य त्वं न आव ह क ल स व न था ग न
 ग न म य वि व इ दा वा न क र्क न ध व मी
 द या मि अ रु य ह न का य व य य का च न

ह न न त्वं ऊ न ह न
 मि द्वि व यि मि द्वि वा
 म व ना मि दा क श न
 या ख म धु ल मा सा क
 व मां न स म या य थ
 य न ॥ ॥ गी या या मा
 न स म या व रु अ मा

न स व न था ग न चू न स म रु त था ग न या
 य व या या मि वा य किं म ना गा शु य
 य त्वं य म न व चू न दं अ द द म धु ल म थ
 या ह व न य ल ना व क र्क ध व का य म न
 नि कि न व ध व मी काल रु य धा न न नी ध
 उ स व रु न थि सौं धं धु था य ॥ ख क न ॥ अ य
 चू मा उ स स म य व रु त था ग न मू द्वा न रु

लया वसयावनर
लसधयाखज्ञानस
सत्वस्यं वदसत्वन
समयवाष्टन आभा
नं न कर्न न तावर्ध
वलसज्ञानसाधया
न ॥ ॐ नानाविक

यायव यदिर्वामिमंकस्यविवयात घव
नानं ॥ ॥ नंयुठववदधधिस्यं ॥ वद
थागनथम नंयुठववदधधिस्यं ॥ वद
विज्ञानशानिकिय नलयावविद्यायया
याया मावकिव यदिव यादिमंनयनं य
व ॥ ॥ थनखाद सविमिसमासकिदुर्थम
वाल अमाष्टकनलकलखमं ॥ समयाति

कमादकन धर्मशा
लयलयव सिद्धि
अमृता ॥ ॐ वदामृता
युक्तिनष्टकनदि
वयातु किनष्टनज्ञा
ष्टन कलुषा याज्ञन
रुमानयाय मांन

लयानमनवलः समयंमलकृष्ण धधर्मन
मिद्धिरुव यिववकागृतादक लकाअभा
दक ० ॥ ॥ अययरुनिसुवा आवगुव
वदयाधि वदयाधितथागनखनं ददकं
मनया ॥ ॐ मंकवतः ॥ या थथयायमाव
नवतयाद मनवष्टनदि मवमकशा अ
किनज्ञाय विद्यमायविदावन रुयंकरन

वरघावन कारकी
 नलकसयतलयि
 ता ॥ ननथिबदिक
 नमानकव आका
 अधिष्टतां वरुस
 लजान वजांकव
 हिलसिर्वरव ह

यांकत्वा यातवनदाव नलकयटघस्या
 व ॥ ॐ नममथादानविधिः ॥ ॥ ॥
 वरुआगनालंश ॥ नदनृदिष्टांरुमितिष्ट
 लजामितानरुयं निष्ठाद्य सर्वतथागत
 त्वमं आदिसत्त्विकिवाधायित्वा ॥ नसाहदि
 काधे योनयुथीमधुल सूर्यं नीलकंकालं
 कवठुवकलसांक वारुधमधुलायविचर

युकरुंकारं ॥ कध
 बुजावदुवका ॥ का
 वाकायवजानीनीय
 याशायादयावधस
 ध विकाधसूक्ति
 यमाधं धिष्टांका
 सादिवास्मिन्धाय

यंकारुववयदाकाद यांकनीला नीलम
 रंविवायः ॥ स्रुदोदुवधिरु निष्टीरु
 नस्रसावय रुंदः ॥ आः रुंकारुयकविस्वा
 दायमंठलादीयनं रंयविधनंवरुकाव
 वधानलमधुलसुन वरुः ॥ कालंघाकि
 रवसिममदेः ॥ याटुयिचयविष्टः रुंका
 यमाधं ॥ मसद्वगवीरंधायान् ॥ धंयुथायधुयं ॥

॥ आर्वस ॥ ॥ आ
शा धालष्टि ॥ विस
न्मि आवध्यविधिः
कृष्णवनास्य ॥ ॥
कृष्ण ॥ ॥ यनम
यवनिर्ग ॥ यथय
क्रिद्विरुवनस्य ॥ ॥

व न य ता रु य र व र व वा र य १ हूँ हः आ ॥
 ऊ न ॥ क ता य त्या दि ॥ हूँ हः आ ॥ मः ॥
 ॥ थ न म ट क ध्य ॥ णि न यि न र क हारि न
 कि य धि व य ॥ अ कि वा र मा र धा सि धि न
 धु ल ढा य क ॥ ॐ ह्य र्य म धु ल र मा म य धि
 न न (थे वा सु दे व ता नां क ल क मः ॥ या हः
 न यी सां श ता ऊ न ॥ या ह म य न्या न ता व यी

कादृगस्यामुमधु
स्वाहाथकाययकं
मरुवशास्वनमरुव
दददका आखंबील
वजयययनिष्ठक
द अधियनिंलला
डं वजसतस्वर्यनं

ले ॥ थनयुष्टयाटन ॥ ॐ धर्मगतद्वाल
 जानकी मधुनघनयक ॥ ॐ निष्ठुवक दृष्ट
 दृष्टयमधिनिष्ठु सर्वसिद्धिमययदृष्ट
 यानिष्टुकसमाकालिनाथकाशदंष्ट्रीद्वक
 ॥ थनस्वाननस्ययक ॥ ॥ नतामिष्यस्यद
 तदृष्टननदय महाबाददंष्ट्रं विनाय ॥
 यन वक्त्यानननत्यवःदृष्ट्याटयनिव

ॐ आ व रु च ऊ व न
व का का य ॥ ॥ य य
॥ ॥ स्व क न ॥ ॥
ग न मं य नि न व य
ल स ऊ य व य वा म
आ रं य दा सं य द वा
म या आ रु वि या सि

क रं ॥ ॐ न च क रं सा दा ॥ य न य य न
या र न य जा या र क ॥ क रु णा य य क ॥ रु ति
दं न म धु लं य य ध म धु म सा द न ध द्वा व
द्वान आ व लं व व द्वा क लं जा न द्वा व द्वा क ॥ १४
दा म न व धि य न म नु म दान अ धि स्थ न या न
य व रं वी सि दि नां स म रु सि दि वा य व स
ध म या अ न ग द श य व । व रु य दा ग ल लि

नं धु य ना क र धान
क न ॥ ॥ थ न अ
न ॥ ॥ म र द व या
ग सि दि या द स र न
स र का र अ ऊ या
दि वा क व दा व लि
सा था ल न स न । व

म नु ध आ वा ध न क र म ना द व आ वा ध न या
द स म धान या म धु ल या ख स्त्रान रु क या ख क
धि व सा रु क मा सि दि वा क स रु का र म धु मा
सा अ द मा सि दि क व दा क या म ध रु दि न
दि क ल य रु व ला रु न यि दा का र रु द्वा नि
न यि दा का ल सि दि म द स्व या र ना न य क
दा व रि ध यि र न सा क स या द स म नु मा न

शुक्लकटाव जंघयट
मड ॥ ॥ यतिगृह
क ॥ लूटयुवायानाय
विद्युद्विगृहिययिर्दु ॥
थक ॥ वरुमधुलमदा
दिनार्द गुक्लमधुल
ठयन् ॥ २ ॥ स्वस्तिक

नक्रमकास्यथिद्युय मधुलसायं सखकायं
हमिमं वत्तमदाववति ॥ द्वाकालखाननचूच
लकिन नथागनस्रकावहियस्य यकनियः
हिचहिमालाजियकचनं ॥ ॥ हिमामध ॥ १९
मधुलसविद्याः दे यागमधुलमदामधुल
मदामधुलदीकिबोर्द दाःदाःदाः ॥ हिमिया
चास्य आमनकयसायकानि हिमामध ॥ गुन

मधुलविविधयः ॥ ॥
गन्धन वृक्षानां तथा
ममायिना वृक्षाथय
खवदुआदिनस्यख
लायविविधसूर्यदय
॥ याथाः नीला वादा
स्थवनिनानकदियः

धनञ्जयः ॥ वाधिवरुण वाधिवरुण
 गनया यथादत्तमदामद गन्धिवरुण
 याधिवरुण यथार्थम स्वकायदत्तम
 विदुः ॥ ॥ रावना ॥ वरुणा लिखिता दत्त
 विदुः ॥ विद्यायात्तिकं वरुणधरवृत्तं विद्याव
 निरुक्तं ॥ ॥ रावना ॥ नदनस्वरुद्धी कमय
 लिन रुथा गनान् विद्यादवीश्व संयुक्तं

आरुयकार्थे ॥ ॥
 दकाया अरुयकार्थे
 गनन । गुणकवायथा
 । मस्यारु । दियानिरु
 ॥ कलेशमाव
 गनेः यस्मै समायने
 वध्य वरुमागेवनि

अधवना ॥ वदनां मरुयकार्थे नथा गन
 दगुजानाय सखरखरथम वादिना नथा
 दके गुणयाखग(थविन) वथा गनददध
 विवथरु ॥ ॥ गुरुधदवस्तुयार्थेना ॥ १०
 मरुत्वा विवकनयके ॥ ॥ तावना ॥ नेतथा
 मदावागेवदविशुय वेवावनदाललाकृति
 नीन नद्वेः दवीयममुखनयवधीन वि

आरुटिनिधुनानन
 थोसंवरवयं हसनम
 किंकिः यद्वाधिसुख
 दूनधुयटाकावसु
 कलकिंशलयावर्जि
 यद्वाधिसृनं मरुयिथी
 ॥ थनकलस अरुयकार्थे

वं हं वरुजान द्विरुः सयसकायसुकाव
 त्वादिनं मरुयिथीमि । यनरुजमखादि म
 गगलमाय यीसृनं लावनादि विशासदीनेः
 वादिनागीननृके यस्याकृतीमादिवृष्टिः
 न वाधिथेके मृतायुष्टिधितकव(ही) रूणिथी
 मानं यागीनीगधगीयमाघी मंजवगीतं ॥
 कवस्यविय ॥ यत्नगलं सकलं ल्यादि ॥ ॥

धनयागमधनस्य क
 वरुजानाक्रां हृदं
 डंमदासखव रुमत्वा
 यतित्वनदृष्टाव ॥
 यकमदावर्द्धने धातु
 यमरुव ॥ डंवेडाक
 आद धनहन अक्रा

वृत्त्यं अक्रियकविय ॥ हूं ऊं ॥ हूं कावाधिष्ठित
 ऊवम्भनीनं हनमत्वकी रुतं हृदयसंयुक्त ॥
 क्रियकनत्वा मारुयिचामि सर्वतथागताधि
 ॥ धीखलं खनवरगतदवनदाय ॥ अक्रि २७
 केनमहर्कनं ददामि सर्ववद्वानां त्रिगुञ्जव
 कारुयियसर्वतत्त्वमदं ॥ यः लाः घैः सुनि ॥
 यस्य अविद्यामलख्यालनया यथाधानाय

धारिलक्रियकः ॥ २
 धियां अवित्रुं वल
 नथागतकुरुवक्रि
 गलगीतं रावयत् ॥
 केनमहर्कनं यथाक
 धानध्विअक्रियि
 क्रिदिअक्रियिचगां

अर्धकनमान
 ॥ अध्यायः ॥ वाधिवरुधत्वादिः ॥ रावना ॥
 मरुवरुयिनं हनमत्वकी रुतं नरुधिसु
 यिंशमानं वृयवडादिकि वृयनीयमानं मः
 मुकननयायक ॥ अक्रियकं मदावर्द्धने धातु
 यदनाथाय मकटयंचकलाकर्व ॥ डंवेडा
 हूं डंवेडावक्रिदिअक्रियि ॥ डंवेडाव
 डंवेडावक्रिदिअक्रियि ॥ डंवेडाव

धिअरिथिअअः॥
 सवनह्वमदं॥७७॥
 नाहनंरतमंदवस्य
 म्यनियानायेवम
 नांदीअः॥मकुटमन
 टाकारिथकः॥
 धिथीदीयैयवित

॥ संखलखनदाय ॥ डं वै ड म क ना रि यें व
 दु य दः ॥ ॥ ॐ नि म क ना रि यें क सम नं
 न था ग न म द या ह स्ता रा रा य नी या यु य नी
 क टा रि यें कः ॥ ३ ॥ थ न या ट क स ॥ डं वै
 य ॥ क्क सा दि लि य नू ल ना य वी ल य द व दं य
 अ (य) य द ॥ वा धि व ड ला दि ॥ थ न रा व ना
 ना मि ना रा त्म कं ह न स त्वा रि नं व डं चा मि ना

कालिकाविरचिता ॥ अ
 धारिकृत्वमसिबद्ध
 कृत्वा सद्धया नगरवर्क
 डैवकारिषिञ्जसव
 मिना कृत्वा ॥ इत्यस्या
 ॥ ५६ ॥ अधवत्ता ॥
 लई खभात्यर्न अमा

क्रियकं महावर्जं त्यादि॥ थन वरु वि य॥ अ
वजा क्रिय कटः ॐ दं न सर्व वृक्षानां गृह्ये
थ क या प्रमाथि यका वि य॥ धी खलै ख न हा या
न ह्विमदं । व जा क्रिय क य स्र व रु धा ह्न न भूः
माना न श ह्न न या ग मा धा ना य व जा क्रिय क
वा पि व र्जं त्या दि॥ का व ना ॥ धि यौ खं का
य सिद्धि ह्न न म त्वा रि ने च धी वा मा य सिद्धि

विरावयन् ॥ अक्रिय
 मि निष्ठवदममयः
 गवन् मादिसान्निदि
 कर्धधुक्रियिचमव
 वधूनाकाकवनाकि
 धमादयधुचकं धं
 त्यादि ॥ रावना ॥ ६

कौमत्यादि ॥ ६ वक्राधियति त्वामक्रियिं वा
 ह्वं दाशवदयधुअअ ॥ गृहीतासिमयारु
 नाकवशाधं धुविय ॥ धं यवखनदाय ॥ ६ व
 नामदं ॥ कृत्या नष्टानअमाद्यसिद्धिः ॥ निवृत्त २३
 वरुनादयाधियत्यधमोदया वाधायिर्दु
 धुक्रियकं ॥ ६ ॥ अथेवदा ॥ वाधिवद
 यं ६ कावात्यनं चकं सुरुनं वेवावननं यं ह

मत्वाकिर्न विरावा ॥
 मदावदत्यादि ॥ ६
 कनः ॥ ६ धीअम
 या अनवृयन नमकि

वदयधु कयालमथीयकं न ॥ अक्रियकं
 वदमत्वत्वामक्रियिवागिवदनामाक्रिया
 कवदुनथागतह्वं रुवद ॥ यथा यानन
 यक यनननचकं अक्रियः ॥ ७

भाय
 (यजुसत्वस्य
 (यमादिवज
 (अनूयमवज
 (धुलनवज
 (सत्ववज समवज
 (अनंगवज विजय
 (अनववज महाधुवज
 हानवज
 (हिरुजवज

दाह
 (अक्रास्य सहवज
 (विशोवज
 (वतिवज
 (लीलीवज
 (लीलितवज
 (स्वयंरुवज हवज
 (कवधावज विम्व
 (हंकारवज
 (चितवज

भायव
 (वेधावनस्य
 (हंकारवज
 (आस्रतवज
 (तथागतवज
 (मायावज
 (वद्ववज
 (रयवज
 (कायवज

२४

जयव
 (वत्सकव
 (वत्तवज
 (वितामलिवज
 (खवज
 (गगधवज
 (नडावज
 (मारुधुवज
 (कास्ववज
 (मानवज

काह
 (अमिताह
 (गमवज
 (यववाकितवज
 (धमेवज कवनवज
 (यवमाशवज
 (सवनीकरवज
 (सवानदवज
 (अमितवज
 (वाकवज

वाह
 (अमाद्यसिद्धि
 (अमाद्यवज
 (यवमाभावज
 (यारमितोवज
 (कमेवज
 (स्थसवज
 (लीध्ववज
 (अनिववज
 (समयवज

मायुव॥
 (अ) का स्य श्री
 वरुवगा
 विवाहिनी
 वरुमदा
 वरुकाकना
 वरुनना
 वरुयनाका
 वरुमाला
 वरुदया
 वरुभावि

हाक
 अका स्य श्री
 वरुनेवाला
 वरुदहा
 वरुवली
 वरुकली
 वरुमामकी
 वरुवलनी

मायु
 वेवावन श्री
 वरुजाकिनी
 वरुगोरी
 वरुलाध्या
 वरुलीवना
 मादवनी

२३

अयव
 वलसंग श्री
 वरुनावा
 वरुमाधन
 वरुहाला
 वरुमाली
 वरुकावहा
 आकाहालनी

काक
 अमिता श्री
 वरुनागा
 वरुअहासखा
 वरुवनावि
 वरुलनी
 वरुहाया
 वरुमारुधु
 वागवनी

वाह
 (अ) माघसिद्धि श्री
 वरुगंधा
 वरुववहा
 वरुमाया
 वरुनावा
 वरुनृलधेवी
 वरुसमया
 वरुवनी

ठं वं ऊनामाशिरिथि
धर्मधामरूपनवेरा
रिथकधामनारु
ठं नामाशिरिथि ॥
रिथक मकट मक
धामरिथक नामा
रिसाखविद्या शिव

सर्वतर्कमर्क ॥ लंखनकाय ॥ युविशुद्ध
वनस्य नदाधियथाशिरिथकसाधियथा
विश्वामनीडा यथाशिरिथकनामवीजमाधा
३ ॥ ननमालाडकक आवहस्रानय २६
ठशिरिथक वज्र वज्ररिथक धं धु धं
नामाशिरिथक दयवठरिथका यनाऊ
नन थानि वरिथक धशिरिथकन

क्रियावय क्रिया
ठन शास्त्रान का
धिरुनारुवाने थ
क्रयाश्रुतायाठन
शानिशायावादि ॥
काचार्यशिरिथक
क्यानिध सागुव

चरवय मनुयाग मनुसाधवय शिव
य मनुसाधन मनुयागसाधनायाय स
नियाअधिकाविरुवा ॥ ॥ अविद्या विद्य
विद्याशिरिथकठयत ॥ सर्वेनलोचनादि
॥ अधेयना ॥ वजावायाशिरिथक व
कामकंदकि रुनाथक्रियनिरुविठन
करुनावक स्वकवयवाथ थवर्ममवया

न अर्थम समर्थम
दं घनयुद्धियानि
थं ॥ जावना ॥ सिवा
कालं कृतं पूर्वदाव
वद सत्त्व च यनावं
॥ अनेनादिनेधनः
नेव वद ॥ समरु

कवसमर्थन सति रुचिवरुवा ॥ डना
लेयमयुष्मादन दृयसादयाकनदना
सर्वविंकावरुचिनां डकिन दूधधुयना
मिदागनसंविचिना दृदवकमलोयाव ॥ २१
वृष्टा ॥ अक्रासमकटं ॥ कालं कंवकं
आर्कमरधनथा सत्त्वा सत्त्वा महालन
द तथागनया आत्मा वदगवदकाय

निःयति वदधानः
रुतिविशुद्धयुगनद
कलनत्त्वमाव वद
कं दृष्टा ॥ अयं सा अ
व दृष्टा दामानगा
सननिश्चयनं सदा
या अयदन किनि

द्वययायतिवदः ॥ वदविच ॥ ॥ अमिय
वाधमाधिननु अदविचवति ॥ नियमाना रुः
धारवनिचमनवद समयः ॥ आकार
माद्यं दृष्टं सर्ववदनां समरुथागतया सदा
सुना दृष्टयासलकाव ॥ तयायिदि दृष्ट
यायो सदा दधरवयिव वाधिनगुी रुन
माना तथागतनयकासयात ॥ दृष्टविच

॥ अरु व मोनि
नानि धिनि जानाय
रुवस्व तावे विरुवि
मोरुव ॥ द्यं घृथा चक
का मृदान धर्म धर्क
रयान श सवे मूर्ति
यन यन त्वन यत्य

धर्म स्तं ध स्रु अ द क्ष ना नि दान न था ग
सधर्मी दधाममय ॥ ॥ स्व ता व शु द्वादि
कृतः स्व ता व शु द्वा ॥ मत्सर्गो किय न य व
॥ आर्लिंग म म दा या चक ॥ म दा दे सम यथा २६
जाया मन मूर्ति ॥ दृष्ट त्वन मन मूर्ति धर
दृष्टा समस्त मूर्ति कान कन यन न न मृदा
काल्य ना धन मृदा धर्क कल्य ना यान ॥

॥ यक्ष या य मगय
मो धानाय मृदा म म
समय ॥ ॥ न ड क
न त्वन संग्रह द्यं घृ
यन ॥ समय व स्तन
य अधि स्थि न या य म
॥ ता व ना ॥ स्व द

महा सखात्म संवद स्व ता व मृदा जा य
यः ॥ थन द्यं घृ सम य वि य ॥ ॥ न्ति नि
य व मा य न नु ॥ व र्ज न त्वन व र्ज ध र य
धर्मा घृ वा कन धर्म न वा य क धर्म धर
धर य महा मृदा आर्लिंग मृदा अधि स्थि
दृष्टा य य न न ग व न म नु धा व र य ॥
दी क विनि गत द व ना वृ द ॥ आ का स स्त

वक्रियेऽमानविचि
यकं मदावर्कं कुं धारु
लय संरुवं ॥ उं सवेन
सि नव डं स्यादा ॥ वन
शौठ द सुन यान
दिकां जि मय नाय
यागन दावाय सवः

चा ॥ वं खल खन वर गत द वन दा य ॥ अकि
कं न म हर्त ॥ द दामि म व व दानां विगु का
था गत अकि थ क ण म धि य ह ॥ उं सयति
नाने चक ॥ ॥ तथा चार्क ॥ ख कन ॥ या धि २९
समालि ह ॥ आलि ग म द ॥ य ह व य ॥ उ ॥
ह ॥ द्य द्या व द मा या ग ॥ य द क वि स ना य
नं म न ॥ आ वा ये न च व य य का ण या दा ॥ ॥

मधुल य म मि ल कं
क क र म म क यं ॥ द
यं ॥ य द्या ॥ य ल्या मि
का वि धि शा ॥ न नः
म नु द या न ॥ द क णी
जा य वि य ॥ धि य न
नि यि ना रु व शा ॥ ७

मना मधुल म क मं ॥ क द ग र मि ति ह नं वि
व ना त र्व ॥ मं क य न ॥ यं ॥ क र्वं च म मा स्य न
ना ॥ अ व व यो रि थ का य व मा या यो रि थ
स्व यं ॥ अ स न रु यं ॥ मि रु यं वा द द या दि
म या रु ग व न ॥ अ सि न् स त्रि ना रु व शा मि य
का य क ॥ गृ दि ना मि म या रु ग व न् म दि स
॥ न य य द ना य ॥ अ द्या दि धि दि वी जा वा

नाय यमार्थमनुधि
याहा वक्रयाः यका
अक्षरनवरक ॥
अयनिर्गदिनि
गथवेद्यनमिवायि
लाकया अथमावक
हयनय ॥ अक्षना

द्विः। क्रुशुर्द्वय मनुयाथनं ॥ सावना ॥ धि
बंधात्वा ॥ डं वं जननाय रुवयटल कोशा
अक्षनं यनवंवत् ॥ अक्षनधायाख मां धिः
सर्व मावकववद्वष्ट ॥ सवाकावेद्यवाजन ३०
विधिं रुटखन यथा लाकसातिमिर्वंधर्थाः
॥ अक्षनयनलायनयनाय दिव्यवक्रवर्ति
रिथक ॥ ७ ॥ क्रुसकनकनशाव ॥ आः व

कं विष्टं दधीयत्वा ॥
थिष्ठधर्मा अक्षुष्टा
वसथमद्विद्व कार्यम
दुष्टकर्मममद्विवा
अक्षसकनर्थ वक्र
नवमकीदनिर्मल
निष्ठति नगवसवा

यानि विंवममाधर्मा क्रुसकनसवाटकूद्वद्व
निर्मलशुद्धिवाट अनाविलाजगाका वि
द्विद्व नकिवायाश्च ॥ ववथिववमद्विद्व
दुष्टकर्ममजायवयसासाव शक्यनवव
सत्वष्ट थर्थिष्ठवद्वसत्वाविद्विज्ञान स्वद्व
वद्विज्ञानाविल शुद्धिविवसथमकां द्ददि
न नवत्वा मासिवाष्टक सर्ववद्विधियः ॥

यं समस्तवद्वयाञ्च
 वैधम्येन विक्रयद
 न् आलये मदा। क
 तुल्यमदयकं काना
 ॥ तथावयनिर्विद्व
 लिष्यकः ॥
 विय ॥ ७ ॥ सर्वेन थाग

धियानि लवं सत्त्वात्तु धर्मार्थैरुच्यकारध
 विष्णयन निःस्वमान धर्मस्वभाव नालया
 लसत्त्वार्थया कृतसत्त्वयाञ्चर्तन मकुलना
 स्कादिनानां जायलियवदर्थनग्यान ॥ ३१
 न विष्णुदत्तेन सत्त्वात्तु मायाययिर्दु दर्थन
 गावना ॥ काः कारकाधनः कालिथावला
 मानवागयत्तः ॥ विष्णुनवनावदु दिव ॥

देवदेव्यावका ॥ ७ ॥ स
 ना यत्तु स्वभावलीय
 वृयविष्णुन सा कृतन ।
 विधिविकल्पलकाध
 वाचकुमालं विद्वया
 धानात्तु वाचक्यः ॥ ७
 धन थकावीमधुल

वेननवागयामिगड कंचनयत्तु धनः समाख्या
 नथथाकार उवाथागुधवांस्मृतां उच्येत्तु
 सलंसदुक्तस्वभावत वलासदुक्तानदत्तस्वभाव
 धवलानवागादि विकल्पस्वरूपः ॥
 नृष्टुः सतम धर्मभादुल क्यनिवध वीजा
 ॥ ७ ॥ निरुक्ता विधिविधिः ॥
 थिवकं स्वानतनकं सगनतकं दकनायका

आदिबोध समयाव
 कानि(ह)वाविधिसमा
 र्थवत्तामिदं॥
 ॥ ८६ ॥

का द्रव्यविशमय बलिविधा र्जन आश्रय ॥
 यथा ॥ विधितं महायातवजाया
 र्थवत्तनेल्लुकासुधकृष्यवद्वमि॥
 विवस्वमयचन काकृडयासनधानया ३१

DH28

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

रककनास्यामहादावंरुयंस्यापिरुयंकव समयसुखवध्याया रु हानसत्वम
 दाकावं वास्याका गङ्गा निया हां रुमावाचुदजानिकं उवर्ज श्रुयदुभच डीच
 रुमहाचोत्तनं ॥ ॥ २ ॥ अवनिनिहिरुजानु सद्यदुस्त्वचवर्जं यदिगवकेलम
 का गङ्गा निहाकिया हां मिदिगदनहेलिवं वेदवृचदेवकृ समयउरु
 वमाविद्वदुकावचार्य ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार DH28

दशाभिषेक